

मराठी

काव्य

काव्य

ओत
काव्य

इ. वि. का. राजनंदे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त संग्रह:—

ग्रंथ क्रमांक ५५११८ (१५)

ग्रंथ नाम सुक काव्य.

विषय मराठी काव्य.

मौजे वेचलें देसपांडे बावळे

मराठी

१. १ हरिकृत बिग्री आख्यान श्लोक
२. २ जनार्दनदास शैलिकृत जगत्सर्व १६१ ओंवा
३. ३ कामतकृत श्लोक
४. ४ कामतकृत श्लोक
५. ५ श्रीधरब्रह्मकृत पंचवक्त्र सवेद्य
६. ६ मोरारिंग चिमणरावकृत लावण्या
७. ७ विश्वनाथकृत नौकाचरित्र श्लोक
८. ८ सिद्धांतकृत पद

॥ नृसिंहाय नमः ॥ ॥ नृसिंहाय नमः ॥
 रराधरी ॥ कः कः ते अद्यदेव ॥
 नल्लणी नल्लुमरी ॥ जयदेव
 जयदेव जयवेदमाते ॥ गुणत्र
 यजनिते व्यक्ते विभुवनजनउ
 दिते ॥ १ ॥ अपरे परसंभुते तरुणी
 तननुतरपो ॥ वनिते सुग
 सरिते निग ॥ ज्ञान ॥ न
 नल्लरसुखा ॥ मिजनवन
 परिपुर्णे ॥ प्रवृत्तीनिव
 तीचिन्मयचिद्गने ॥ १ ॥ आ
 ह्यापध्वनिनिजगीतजयव्यर्थ
 मात्रे ॥ त्रयस्त्रीशतकोटीत्रय
 सुरसुनिजननमिते ॥ तव
 सा आंगणिन अगुणसन्



नेधिभरित॥ ब्रह्मानंदगु

रुद्राष्टकं कथितम् ॥ ३ ॥

दि नक्षत्रमारभ्य जे मनक्षत्रगण्य
ते ग्रहसंख्या हरे जागं लेष च व
हनमुच्यते ॥ रा रा रा आ श्व ह

रत्नत्वान्नल्यवांजिना

३ लक्ष्मीप्राप्तिगण्यख्याता

मेपंचमरुधुवपाधुव॥

जबुके कार्य कताय

६ रजोहं शुभ्यवाहने।

काकेंच

मयुरहंसश्च यीश्ववहन

जो शोभे यमुना तट दुख वकी ॥ जो रे द
 लागे वकी ॥ जो रे के शुरु गो कु की
 रकी चाना देंची गर रे वकी ॥ ज्य ची मुता
 महे शची त कम की ध्या नो सदा साव
 तो हा की ठल राउ की तुहं पा हा तो
 ल जन्मा वकी ॥ १ ॥ जो वागे द्रं वा ल
 ची परतु वी पा मा दी कां चा छ वी ॥ क
 णी आ ई क वी ॥ सी क वी ने ने
 सी जो दर व ॥ धी म ही वा
 वीर स व की ॥ नै न नी व वी
 तो हा वी ठ क ॥ वे अ नु म वी
 वी न जा ण म ॥ १ ॥ अ का शा स
 मना ही न बी स ही त म ही तारी ली
 निर उ ही ॥ न रं आ धार का ही ग्र ह
 ग ण म ग ण ॥ ची ल वी चो ज पा ही
 स ता सर्व व दे ही प्र ग ट्नी कर ण चे त
 वी प्रा ण तो ही ॥ तो ची ती ची त ग ही
 आ नु दी नी नु ही स त व न
 ॥ १ ॥ ना ही ॥



ओं जुळि चें जुळ जाय गळो नित सें व
 यजातु आ मोली कवां यो ॥ ये इत काय पु
 न्हां पर तो नी जग मी षा ती दुर्लभ हे नरक
 या ॥ यास्त वसा धुस माग म साधु नी
 ते अधक्ची तीत जा नी ज मावे ॥ नाही
 तरी म गजा चणी मो गु नी मां गुंती
 मां गुंती ज मा गावे ॥ १ ॥ देह आश
 शास्य त अं ॥ २ ॥ च नाय प के प
 छ हीन को ल म नी घरी नां दी
 न्यामी जी का कां च न गर्व आह
 ता ॥ ३ ॥ दृष्ट स न लागी च ना सुख
 मो गी च ना ली न हा उ नी संता ॥ ४ ॥
 प दां पु ज आ ठ वी ना ज न व्यर्थ करी
 त क स नी ज वा ता ॥ ५ ॥ प्रा स ध री प
 प दू द पु प ती च त री मा गु नी जा य वी प
 य व री ॥ मां दी र सुं द र मा नी ती हा गी
 र टा कु नी य ती द री ॥ ये श व
 य व ची अपे र्ग यो ग वी यो



point of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

गसमानसरी॥ काळ करील वसा
 साविध सासु सखानी जसम करी॥
 देणुनियां परी पुर्ण सुधी करस
 विसुखि परिचोरडे॥ वर्तति
 चा॥ दणियां तरपमला हिनर
 रज्ञां पडिमाजि देजे॥ साधु
 भोजन उदर रिपापिन जा
 उशके ते मन संतक
 पामत दष्टे॥ लयिय दवे
 केविपडे॥॥॥



प्रापतें ननु केपरमेशी॥ हीं
 एतावळुं यांकी तश्रुषी॥ देह
 टाकु निनभा प्रतीजाये॥ क
 र्मसाहुनी पुढे करी॥ गो॥

बाळकळानि धिमाकिरळाकि तव्याक
 जलपेटितपोटविराजे ॥ पंकजजाकुश
 लउफरशकरिउदिराहनसुंदर ॥ साजे
 नसकरिथकुथांगजउथाधिकबागरि
 धाळधुकु ॥ १ ॥ बंधुनियांताग
 णाधिपुजा ॥ मरविहस्राजे ॥ ११ ॥
 नवजोवनमोगु ॥ रे ॥ निसेमगवृद्ध
 पणिजपमळ ॥ रीतकरयेउनि
 सर्वहरिदिवसादिपलाउनिमेउभरि
 आनळेव्यानिळे गृहसर्वजकेमग
 कुरकुघेउनिचुपकरि ॥ मरणापम
 इनमणेतहरिजयरामरुनेव
 रेबउकरि ॥ ११ ॥



पदमुक्तावा (4A)

टिछेटोपीमाळादेवाचेंगवाळ
वागवीवोंगळपोटास्तटि ॥१॥
तुळसीखोविकांनीदभखोवी
कांनीसेंडीलटकीधरिबोडिना
सीकाची ॥३॥ तुकाळपाऊसे
मावेचेजेमैत गारींगोविंद
नाहीनाही ॥ ५॥ ५॥



गजा रे
उमण्डासकळिकव्यधित्य
रागजखेप्रीसीचानायकर
खेदायकभाकासि—
धंगरिसेदराचिउद

(5A)

श्रीमज्जेशाय नमः विभुती स्यात्
पवसे तीरव्यवचे सु भविष्यते त्व
स्या नीजो राडे कतीरु चर्या
घोर वर दिसे च भा वं नि वापि
सुरवर मुनि रत्ना नी जपति
व्यासा शरीर मरु कं लुपु
मये देव हरे
ज्जदे मध्य गंगा दश कर ज
यावन्ही नयनि ॥ कसिते वा
मांगी हिम गिरी सुत व्यादि
जननी ॥ स्वर्ग वे निवी पी स
रं वे रं मे नी ज्यो रे नी जे पति ॥ पु
ता वा ११ ध्या हा स कळ तु मने
ष हर ती ॥ २ ॥



लक्ष्मीपतिनरहरी निजदासदाका
 तुमु कीदायक व्यासि बिरहैकमाका
 आनाथबंधुवदतिश्रुतिवरगी
 रमासेवि सैव सुण कांकरजा
 बनयरे ॥ १ ॥ नापत्रये तनुबहु
 सीपा लीदया ॥ २ ॥ उपेक्षी लुम
 जकसेधुव ॥ ३ ॥ भावादेन
 निबहुतव्य ॥ ४ ॥ सुसारी ॥ मासे
 विनीय ॥ ५ ॥ बहुलकष्ट
 विलें तनुत ॥ ६ ॥ आठविलेंतु
 क्षीयापदानें ॥ ७ ॥ कल्युतरवि
 घ्नविनाशकारोभासेवि ॥ ८ ॥
 नामेंतु स्यापतिन तंतर
 अनेक ॥ ९ ॥ पक्ष्यादिकी एक
 यशमुठठदिनरंक ॥ १० ॥

हृनिमीपतितकापरमावरारे॥न
 (6A)
 ले॥४॥पीतापित्रयजननि
 मंतुचीबेधु॥नाहीदुजातुज
 विरोंकरणेकसिधु॥धावेव
 रेबुडतरंभवसागरिर॥मो
 ह्यवि०॥५॥नारायणांन
 रहरीन॥६॥आ
 यनाथक॥करणीतिष
 र॥चैतन॥मननुबहु
 पोलठीर॥मासे॥७॥प्र
 लदाद्देयनिजभक्तहरितु
 सारे॥योकारणविषदी
 त्तेजमनिकरीरे॥सासं
 कटीविषसुधांकरीसीहरिरे
 मासे॥८॥

नतरे असुर सावयेने कदा वि॥ अणुमि

नी ब्यालु मगवर्म कले सुला वि॥ तेव
दुनिन मितांदा सह रिनु दारे॥ मासे वि

॥०८॥ कोपो नीदैसु वद ला निज सेव क
ला॥ प्रल्हाद नेउ निकरा गिरि

पातया ला॥ तेदां गीरी महि संमा
न करि हरि रे॥ गोविंसी ॥०९॥

उचित ल॥ कुडविशा
व्व के ले॥ असुर व्यभ

रु निमगने ले॥ प्रल्हा
द स्पर्श करि तां हरि निव वि

रे॥ मासे॥ १०॥ माहा ए वि
बुड वि तां असुरें सुता ला॥

ची निस्मरे उदधि ज्या पति
व्या पदाल॥ नौ का स्व

चि हरि हा उ नि तार सिरे॥

नाशे वि॥ ॥ १॥ ॥ अणु निरु
तन पावध में सभे ली ॥ दुष्ट
तरे कर विन गमा हा सति के मे
ते का हरी निज कर वसन दिल्ल
॥ मोक्षे वि॥ ॥ १॥ ॥ भाया म स लो कि
नर भु परा जे ॥ स वृत्त या च वति
वति मा न्ये ॥ १॥ ॥ स तु इ
मण कि हे ॥ १॥ ॥ १॥ ॥
आद्या चं नि ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ निक
सा जं बु के ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ तै स
मी त वे दा स दु खि त बु डे के सी
भवे हो ते से ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ व्य न के
तु ते नु ज हरि रार की ब्री दा व र्णि
ल्या ॥ १॥ ॥ १॥ ॥ तु धा की ती स क
जे जी वे वा हि ज न्म ज रा दि दु
खि त भ वे दा वि प रा अ पु ल्या ॥ १॥ ॥

(8)

वीकाळि जपावे माहा स्तो
त्रेव वें ॥ न सिंहा रव्य ना मा
वळि ह चि व वें ॥ तथा का
रण प्राप्तीच्या तुर्यवृत्तीव
देवांमनि वैगवरी हे चि मुक्ती
१५ ॥ काईति नरे चि देहा वस्तु
मस्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५
आका क ॥ व वृत्ती चारु
पुत्रे मण वि वृत्ती चारु
॥ भारि पुतनी शोक ता पृह
रु नि गावर्धना ते धरि ॥ को सा
छ दु नि कोर वा दिक व धी
को ती सु तां पाळी ता ॥ हे स
भाग व नि पुरा णा ण ति

श्री हनुमन् का मृत ॥१॥

भ्रिगोशापनमः सवाई

भारजटासिरिंवाडविष्णुनरव

नमदिगांवराधावतसे ॥ यावक

पंचकसाधनसाधनिष्ठमूढा

धोमुरविरोधातसे ॥ मोह्य

नबोळवांसाउद्धक

रेमुरववासि ॥ वेदयेनक

हीदेरिवियडे सनीमा। लि

नदेखु तसे ॥१॥

सुरेंद्रा पुढे कायकर्ती नरेंद्रा के

पिंदा पुढे कायथावेरवनेंद्र ॥ म

गेंद्रा पुढे कायवावेगजेन्द्र ॥ मुनि

द्रा के पिंदा पुढे हासकुद्र

हरिरेव जगज्जगक हरिरा हरि
 णा जगता नहि भो नतनु ॥ इति
 यस्य भूतिपरमार्थगतिासन
 राभवसागममुत्तरति ॥ १॥ टीका
 हरिरुपजगि जगयक हरि
 तनुभी नन वध्याची ह
 रिमति असीपरमा
 र्थपदिनर तरपवसि
 युपदि ॥ १॥ अनादिपुत्रि
 मुहं जाहाली निगुणि हे
 प्रकृति ॥ प्रकृतिस्ववपुरुषा
 नामरव्याति ॥ उभेतागुण
 लागलि सर्वनाति ॥ बरंशोधु
 निसंतसाधुपाहाति ॥ १॥ वधु
 नादेवरतौ तियेचा ॥

ननु मामाचुवतापुत्रभाचा
 ऐसीनातिलागलीनेश्वरीयेसिता
 विद्मशासिव्याससांगेकथेसी
 वैस्यापकपरासिरतलीज्जवि
 जुलीवाळके॥ कन्यापुत्रतीणे
 सजीयलातपोसिवेलीणीके
 जालीया॥ कळताळ
 मासलीला॥ बंधुहोयत
 येसिकळे॥ नयासांगिले
 ॥३॥ वेस्येसितोडुजितयोनावासा
 श्रगहायेउनिल्लानराने॥ निचे
 नियोगेमगपुत्रजाला॥ विनो
 दबोलेषगिनीमायाला॥ माळो
 व्यासउवाचा॥ नाताक्षितिच
 निन्मासिदेवसासिचराप्ति

तत्र व्योसिपि त्रव्योसिपु त्रयोत्र
 त्रव्योसिका ॥१॥ बंधु सरवा
 देवर त्रैचीपां ही ॥ मन्तर
 मामामज चुलताहि ॥ तुं पु
 त्रमाशा व्यापि पौत्र होसि ॥
 ऐसा परिम व विवाळ कासि
 ताना फळा ज ग विष्ट
 किलर पा दपति देव
 योगात देव गय हीना
 श्रीस्तदनुश्रुति वस्त्रा द्योगिणि
 स्वप्न पद्य ॥ सांसा व्यस वं इं
 बाज्यनितं पत्नी सुतं योगिणि
 लायेतेति ॥ मात श्रीत व्यन सं
 न ॥ त्रसुरपति सुतं त्रसुर देव





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com